International Journal of Advanced Education and Research
ISSN: 2455-5746; Impact Factor: RJIF 5.34
Received: 16-01-2019; Accepted: 19-02-2019
www.alleducationjournal.com
Volume 4; Issue 2; March 2019; Page No. 58-60

रीवा जिल में उच्चतर माध्यमिक स्तर पर शैक्षिक तकनीकी के उपयोग के फलस्वरूप शिक्षकों के शिक्षण कौशल पर पड़ने वाले प्रभाव का तुलनात्मक अध्ययन

प्रमोद शुक्ल[1], डॉ0 जय सिंह[2]
[1] शोध छात्र शिक्षा, अवधेश प्रताप सिंह वि.वि., रीवा, मध्य प्रदेश, भारत।
[2] प्राध्यापक शिक्षा, शासकीय शिक्षा महाविद्यालय, रीवा, मध्य प्रदेश, भारत।

सारांश
इस शोध पत्र के द्वारा रीवा जिला में उच्चतर माध्यमिक स्तर पर शैक्षिक तकनीकी के उपयोग के फलस्वरूप शिक्षकों के शिक्षण कौशल पर पड़ने वाले प्रभाव का तुलनात्मक अध्ययन किया गया है। शोध क्षेत्र के 81.11 प्रतिशत प्राचार्य, 80.83 प्रतिशत शिक्षक, 70.00 प्रतिशत अभिभावक व 78.56 प्रतिशत छात्रों का अभिमत है कि उच्चतर माध्यमिक स्तर पर शैक्षिक तकनीकी के उपयोग के फलस्वरूप शिक्षकों के शिक्षण कौशल पर सकारात्मक प्रभाव पड़ रहा है। शोध क्षेत्र के ग्रामीण विद्यालयों में शैक्षिक तकनीकी के उपयोग के फलस्वरूप शिक्षकों के शिक्षण कौशल पर पड़ने वाले प्रभाव में सार्थकता का औसत उपलब्धि 62.06 है तथा मानक विचलन 10.52 है। शहरी विद्यालयों में शैक्षिक तकनीकी के उपयोग के फलस्वरूप शिक्षकों के शिक्षण कौशल पर पड़ने वाले प्रभाव में सार्थकता का औसत उपलब्धि 64.50 है तथा मानक विचलन 10.61 है। 358 df पर सार्थकता के लिए 't' का मानक मान 0.01 विश्वास स्तर पर 2.58 तथा 0.05 विश्वास स्तर पर 1.96 है, जबकि अध्ययन से प्राप्त 't' का मान –2.19 है, जो कि दोनो विश्वास स्तरों के मानों से कम है। अतः शोध क्षेत्र के ग्रामीण व शहरी विद्यालयों में शैक्षिक तकनीकी के उपयोग के फलस्वरूप शिक्षकों के शिक्षण कौशल पर पड़ने वाले प्रभाव में कोई सार्थक अन्तर नही है।

मूल शब्द : रीवा जिला, उच्चतर माध्यमिक शिक्षा स्तर, शैक्षिक तकनीकी, शिक्षण कौशल।

प्रस्तावना
शिक्षा ही एक मात्र ऐसा साधन है जो मनुष्य की जन्मजात पाश्विक प्रवृत्तियों का शोधन करती है, मानव व्यवहार में परिवर्तन लाती है, उसे जीवन की कला प्रदान करती है तथा मनुष्य को एक सामाजिक प्राणी बनाती है। इस प्रकार शिक्षा मानव विकास हेतु परमावश्यक सिद्ध हुई है।
आज सम्पूर्ण विश्व ज्ञान के हर क्षेत्र में अत्यन्त तीव्रगति से प्रगति की ओर अग्रसर हो रहा है। जीवन के हर क्षेत्र में नई–नई खोजों के समाचार सुनने को मिल रहे हैं। ये सूचनाएं व्यवस्थित रूप से प्राप्त करने, उनके संकलन, विश्लेषण व पुनः प्राप्त करने की एक प्रभावी तकनीक है। कम्प्यूटर के माध्यम से जब ये सारे कार्य सम्पन्न किये जायें तो यह अध्ययन सूचना तकनीकी कहलाती है। ओफीश महोदय के अनुसार – "तकनीकी, विज्ञान का कला में प्रयोग है।" दूसरे शब्दों में जब वैज्ञानिक ज्ञान को व्यवहारिक कार्यो में प्रयोग किया जाता है, तो उसे तकनीकी कहते हैं। साधारणतः व्यक्ति 'तकनीकी' शब्द की मशीन अथवा मशीन सम्बन्धी प्रत्ययों से जोड़ते है। किन्तु यह आवश्यक नहीं कि तकनीकी में मशीन का हमेशा प्रयोग किया ही जाए। इसका तात्पर्य तो किसी भी ऐसे प्रयोगात्मक कार्य से है, जिसमें वैज्ञानिक ज्ञान या सिद्धान्तों का प्रयोग किया जाए।
अतः शोध द्वारा यह ज्ञात करना अत्यन्त आवश्यक है कि उच्चतर माध्यमिक स्तर पर शैक्षिक तकनीकी के उपयोग के फलस्वरूप शिक्षकों के शिक्षण कौशल पर सकारात्मक प्रभाव का स्तर कैसा है तथा इसका प्रभाव उनके शिक्षण व्यवसाय पर किस सीमा तक पड़ रहा है। इसी उद्देश्य को ध्यान में रखते हुए शोधार्थी ने प्रस्तुत शोध समस्या का चयन किया है।

2. अध्ययन की आवश्यकता :
शोधार्थी द्वारा प्रस्तुत शोध कार्य न केवल रीवा जिले वरन् सम्पूर्ण मध्यप्रदेश के शिक्षा में शैक्षिक तकनीकी के प्रयोग के समस्त संदर्भो तक किया गया है। शोध का विषयवस्तु शिक्षा में शैक्षिक तकनीकी के प्रयोग के प्रथम उद्देश्य की पूर्ति पर लक्षित है। अतः इस शोध कार्य से शोध क्षेत्र के विशेष सन्दर्भ में निम्नलिखित महत्व है–

- शैक्षिक तकनीकी के उपयोग के फलस्वरूप शिक्षकों के शिक्षण कौशल पर प्रभाव की स्थिति ज्ञात की जा सकेगी।
- ग्रामीण व शहरी विद्यालयों में शैक्षिक तकनीकी के उपयोग के फलस्वरूप शिक्षकों के शिक्षण कौशल पर पड़ने वाले प्रभाव में कोई सार्थकता ज्ञात की जा सकेगी।

3. शोध की परिकल्पनायें
प्रस्तुत शोध अध्ययन में शोधार्थी का पूर्वानुमान परिकल्पनाओं के रूप में निम्नवत् हैः–

1. "शोध क्षेत्र के उच्चतर माध्यमिक स्तर पर शैक्षिक तकनीकी के उपयोग के फलस्वरूप शिक्षकों के शिक्षण कौशल पर सकारात्मक प्रभाव पड़ रहा है।"
2. "शोध क्षेत्र के ग्रामीण व शहरी विद्यालयों में शैक्षिक तकनीकी के उपयोग के फलस्वरूप शिक्षकों के शिक्षण कौशल पर पड़ने वाले प्रभाव में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।"

4. उद्देश्य
प्रस्तुत शोध कार्य निम्नलिखित उद्देश्यों को ध्यान मे रखकर किया गया हैः–

- शैक्षिक तकनीकी के उपयोग के फलस्वरूप शिक्षकों के शिक्षण कौशल पर प्रभाव की जानकारी प्राप्त करना।
- ग्रामीण व शहरी विद्यालयों में शैक्षिक तकनीकी के उपयोग के फलस्वरूप शिक्षकों के शिक्षण कौशल पर पड़ने वाले प्रभाव में कोई सार्थकता ज्ञात करना।

5. शोध समस्या का सीमांकन
5.1 भौगोलिक परिसीमनः प्रस्तुत शोध कार्य का क्षेत्र रीवा जिला है। इसके अन्तर्गत 9 विकासखण्ड – रीवा, रायपुर कर्चुचिलयान,

सिरमौर, जवा, हनुमना, गंगेव, त्यौथर, नईगढ़ी एवं मऊगंज हैं।

5.2 विषयवस्तु का परिसीमनः अध्ययन की विषयवस्तु का परिसीमन, जिला अन्तर्गत स्थित उच्चतर माध्यमिक स्तर पर शैक्षिक तकनीकी के उपयोग के फलस्वरूप शिक्षकों के शिक्षण कौशल पर पड़ने वाले प्रभाव को इस अध्ययन के अन्तर्गत सम्मिलित है।

6. शोध विधियाँ

प्रस्तुत अध्ययन में निम्नलिखित विधियों एवं उपकरणों का उपयोग किया गया है –

6.1 सर्वेक्षण विधिः प्राथमिक स्त्रोतों से प्रदत्तों के संकलन एवं पूर्व संचालित प्रदत्तो के सत्यापन हेतु शोध क्षेत्र के उच्चतर माध्यमिक शिक्षा स्तर के विद्यालयों का सर्वेक्षण किया गया है।

6.2 अवलोकन विधिः शोध अध्ययन के लक्ष्यों की प्राप्ति हेतु उच्चतर माध्यमिक स्तर पर शैक्षिक तकनीकी के उपयोग के फलस्वरूप शिक्षकों के शिक्षण कौशल पर पड़ने वाले प्रभाव की वर्तमान स्थिति का पता लगाने हेतु न्यादर्श के रूप में चयनित उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यालयों का अवलोकन किया गया है।

6.3 साक्षात्कार विधिः शोध क्षेत्र में उच्चतर माध्यमिक स्तर पर शैक्षिक तकनीकी के उपयोग के फलस्वरूप शिक्षकों के शिक्षण कौशल पर पड़ने वाले प्रभाव का गहन अध्ययन करने के लिए इस क्षेत्र में संलग्न शिक्षक, प्राचार्य तथा अभिभावकों से उनकी अभिवृत्तियों व वस्तुस्थिति का पता लगाने हेतु साक्षात्कार किया गया है।

6.4 सांख्यिकी विधिः प्रयुक्त शोध उपकरणों से प्राप्त प्रदत्तों के सारणीयन के उपरान्त आवश्यकतानुसार माध्य, माध्यिका एवं बहुलक, दो चरों में सार्थक अन्तर के आंकलन हेतु मध्यमान विचलन, टी–परीक्षण जैसी सांख्यिकी विधियों का प्रयोग किया गया है।

7. न्यादर्श चयन

अनुसंधान तथा शोध के प्रयोग का प्रारूप न्यादर्श की प्रविधि पर आधारित होता है। एक उत्तम प्रकार के शोध कार्य में न्यादर्श तथा उसकी जनसंख्या संबंधी समस्त सूचनाओं को दिया जाता है। शोध कार्य को सार्थक करने के लिए न्यादर्श का चयन किया जाता है। शोध कार्य के लक्ष्यों की प्राप्ति हेतु गहन अध्ययन करने के लिए न्यादर्श के रूप में चयनित विद्यालयों से 4–4 शिक्षक कुल 360 शिक्षक, अभिभावक तथा प्रत्येक विद्यालय से 10 छात्र व 10 छात्राएं कुल 1800 का चयन दैव निदर्शन पद्धति से साक्षात्कार हेतु किया गया है।

8. पूर्ववर्ती शोध अध्ययनों का विवरण

किसी भी शोध कार्य को सोद्देश्य तथा अधिक प्रभावी बनाने के दृष्टिकोण से यह आवश्यक हो जाता है कि शोधार्थी अपनी शोध समस्या के समरूप पूर्व में किए गये अन्य शोध कार्यों के बारे में संक्षिप्त जानकारी प्राप्त कर ले। इसी दृष्टिकोण से शोधार्थी ने उच्चतर माध्यमिक स्तर पर शैक्षिक तकनीकी के उपयोग के फलस्वरूप शिक्षकों के शिक्षण कौशल पर पड़ने वाले प्रभाव की वर्तमान स्थिति पर किये गये कुछ प्रमुख तथा सहज रूप से उपलब्ध पूर्व शोध अध्ययनों के विषय–वस्तु की जानकारी प्राप्त करने का प्रयास किया है। संक्षेप में उनका विवरण निम्न है – शर्मा, राजकुमारी, श्रीवास्तव एस.बी.एन., दुबे, एस.के. (2007)[1], तिवारी, महेन्द्र मणि एवं डॉ. जय सिंह (2017)[2] एवं गुप्ता, एस.पी. तथा गुप्ता, अल्का (2007)[3], पाठक, पी.डी. (2007)[4], सिंह, ममता (2007)[5], यादव, परमानंद सिंह एवं यादव लालधारी (2006)[6]।

9. शोध क्षेत्र का परिचय

जिला रीवा मध्य प्रदेश के उत्तरी–पूर्वी कोने में स्थित है। रीवा का नामकरण नर्मदा नदी के दूसरे नाम 'रेवा' पर आधारित है। रीवा नगर का नाम पहले शायद 'रेवा' रखा गया था। उसी का बिगड़ा रूप अब रीवा बन गया है।

इसके उत्तर में उत्तर प्रदेश के बांदा एवं इलाहाबाद जिले, पूर्व तथा पूर्व–उत्तर में उत्तर प्रदेष का ही मिर्जापुर जिला, दक्षिण में अपने राज्य का सीधी जिला और दक्षिण–पश्चिम तथा पश्चिम में सतना जिला है। इसका आकार लगभग त्रिभुज के समान है। इसका विस्तार 24.18^0 उत्तरी अक्षांश से 25^0 उत्तरी अक्षांश तथा 81.2^0 पूर्वी देक्षांश से 82.18^0 पूर्वी देक्षांश के मध्य है। रीवा जिले का क्षेत्रफल 6287 वर्ग किलोमीटर है।

10. परिणामों का विश्लेषण एवं व्याख्या

शोधार्थी द्वारा किया गया कोई भी शोध कार्य सही अर्थों में तभी प्रतिबिम्बित होता है, जब शोधार्थी द्वारा उस समस्या की वास्तविक स्थिति का मूल्यांकन किया जाय। इसके लिये यह आवश्यक है, कि शोधार्थी द्वारा शोध अध्ययन में उपयोग किये गये समस्त शोध उपकरणों द्वारा प्राप्त जानकारियों को व्यवस्थित क्रम में सारणीबद्ध किया जाय, निम्नानुसार है–

परिकल्पना क्र. – 1 "शोध क्षेत्र के उच्चतर माध्यमिक स्तर पर शैक्षिक तकनीकी के उपयोग के फलस्वरूप शिक्षकों के शिक्षण कौशल पर सकारात्मक प्रभाव पड़ रहा है।"

सारणी 1: शोध क्षेत्र के उच्चतर माध्यमिक स्तर पर शैक्षिक तकनीकी के उपयोग के फलस्वरूप शिक्षकों के शिक्षण कौशल पर सकारात्मक प्रभाव का अध्ययन का अध्ययन

क्र.	जानकारी संकलन के स्त्रोत	न्यादर्श में चयनित संख्या	उच्चतर माध्यमिक स्तर पर शैक्षिक तकनीकी के उपयोग के फलस्वरूप शिक्षकों के शिक्षण कौशल पर सकारात्मक प्रभाव					
			पड़ रहा है		नही पड़ रहा है		नही पता	
			संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत
1.	प्राचार्य	90	73	81.11	17	18.89	-	-
2.	शिक्षक	360	291	80.83	41	11.39	28	07.78
3.	अभिभावक	360	252	70.00	54	15.00	54	15.00
4.	छात्र	1800	1414	78.56	214	11.89	180	10.00
योग		2610	2030	77.78	326	12.49	262	10.03

उपरोक्त सारणी क्र. 1 के अध्ययने से स्पष्ट होता है कि शोध क्षेत्र के 81.11 प्रतिशत प्राचार्य, 80.83 प्रतिशत शिक्षक, 70.00 प्रतिशत अभिभावक व 78.56 प्रतिशत छात्रों का अभिमत है कि उच्चतर माध्यमिक स्तर पर शैक्षिक तकनीकी के उपयोग के फलस्वरूप शिक्षकों के शिक्षण कौशल पर सकारात्मक प्रभाव पड़ रहा है।

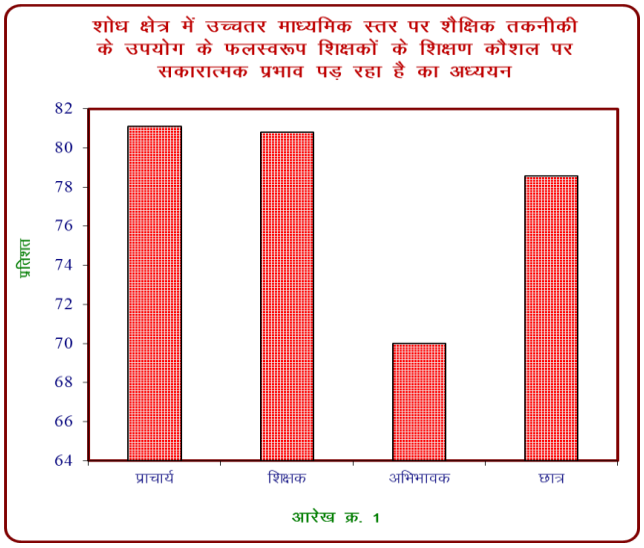

आरेख क्र. 1

शोध क्षेत्र के 77.78 प्रतिशत अभिमतादाता यह मानते हैं, कि उच्चतर माध्यमिक स्तर पर शैक्षिक तकनीकी के उपयोग के फलस्वरूप शिक्षकों के शिक्षण कौशल पर सकारात्मक प्रभाव पड़ रहा है। 12.49 प्रतिशत अभिमतादाता यह मानते हैं, कि उच्चतर माध्यमिक स्तर पर शैक्षिक तकनीकी के उपयोग के फलस्वरूप शिक्षकों के शिक्षण कौशल पर सकारात्मक प्रभाव नही पड़ रहा है, जबकि 10.037 प्रतिशत अभिमतदाताओं को इसके सम्बंध में कोई जानकारी नहीं है।

अतः परिकल्पना क्र. 1 सत्यापित होती है।

परिकल्पना क्रमांक – 02 "शोध क्षेत्र के ग्रामीण व शहरी विद्यालयों में शैक्षिक तकनीकी के उपयोग के फलस्वरूप शिक्षकों के शिक्षण कौशल पर पड़ने वाले प्रभाव में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।"

सारणी 2: "शोध क्षेत्र के ग्रामीण व शहरी विद्यालयों में शैक्षिक तकनीकी के उपयोग के फलस्वरूप शिक्षकों के शिक्षण कौशल पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन

समूह		ग्रामीण उच्चतर माध्यमिक शिक्षा स्तर	शहरी उच्चतर माध्यमिक शिक्षा स्तर
समूह की संख्या (N)		180	180
मध्यमान (M)		62.06	64.50
मानक विचलन (SD)		10.52	10.61
क्रान्तिक निष्पत्ति (C.R.)		–2.19	
निष्कर्ष	0.05 सार्थकता स्तर पर	सार्थक अन्तर नही है	
	0.01 सार्थकता स्तर पर	सार्थक अन्तर नही है	

df = (180-1) + (180-1) = 179+179 =358

उपरोक्त सारणी क्रमांक 2 मे न्यादर्श में चयनित शोध क्षेत्र के ग्रामीण विद्यालयों में शैक्षिक तकनीकी के उपयोग के फलस्वरूप शिक्षकों के शिक्षण कौशल पर पड़ने वाले प्रभाव से सम्बधित प्रदत्त संकलित किये गये हैं। संकलित प्रदत्त प्राथमिक स्त्रोत पर आधारित है। सारणी में संकलित प्रदत्तों का सांख्यिकीय विश्लेषण से स्पष्ट है कि शोध क्षेत्र के ग्रामीण विद्यालयों में शैक्षिक तकनीकी के उपयोग के फलस्वरूप शिक्षकों के शिक्षण कौशल पर पड़ने वाले प्रभाव में सार्थकता का औसत उपलब्धि 62.06 है तथा मानक विचलन 10.52 है।

उपरोक्त सारणी क्रमांक 2 में न्यादर्श में चयनित शोध क्षेत्र के शहरी विद्यालयों में शैक्षिक तकनीकी के उपयोग के फलस्वरूप शिक्षकों के शिक्षण कौशल पर पड़ने वाले प्रभाव के सम्बन्ध में प्रदत्त संकलित किये गये हैं। संकलित प्रदत्त प्राथमिक स्त्रोत पर आधारित है। उपरोक्त सारणी में संकलित प्रदत्तों का सांख्यिकी विश्लेषण किया गया है। सांख्यिकी विश्लेषण से स्पष्ट है कि शोध क्षेत्र के शहरी विद्यालयों में शैक्षिक तकनीकी के उपयोग के फलस्वरूप शिक्षकों के शिक्षण कौशल पर पड़ने वाले प्रभाव में सार्थकता का औसत उपलब्धि 64.50 है तथा मानक विचलन 10.61 है।

358 df पर सार्थकता के लिए 't' का मानक मान 0.01 विश्वास स्तर पर 2.58 तथा 0.05 विश्वास स्तर पर 1.96 है, जबकि अध्ययन से प्राप्त 't' का मान –2.19 है, जो कि दोनो विश्वास स्तरों के मानों से कम है। अतः शोध क्षेत्र के ग्रामीण व शहरी विद्यालयों में शैक्षिक तकनीकी के उपयोग के फलस्वरूप शिक्षकों के शिक्षण कौशल पर पड़ने वाले प्रभाव में कोई सार्थक अन्तर नही है।

अतः परिकल्पना क्र. 2 सत्यापित होती है।

निष्कर्ष

अनुसंधान के परिणामों से प्राप्त निष्कर्ष निम्नानुसार है

- शोध क्षेत्र के 81.11 प्रतिशत प्राचार्य, 80.83 प्रतिशत शिक्षक, 70.00 प्रतिशत अभिभावक व 78.56 प्रतिशत छात्रों का अभिमत है कि उच्चतर माध्यमिक स्तर पर शैक्षिक तकनीकी के उपयोग के फलस्वरूप शिक्षकों के शिक्षण कौशल पर सकारात्मक प्रभाव पड़ रहा है।
- शोध क्षेत्र के ग्रामीण विद्यालयों में शैक्षिक तकनीकी के उपयोग के फलस्वरूप शिक्षकों के शिक्षण कौशल पर पड़ने वाले प्रभाव में सार्थकता का औसत उपलब्धि 62.06 है तथा मानक विचलन 10.52 है। शहरी विद्यालयों में शैक्षिक तकनीकी के उपयोग के फलस्वरूप शिक्षकों के शिक्षण कौशल पर पड़ने वाले प्रभाव में सार्थकता का औसत उपलब्धि 64.50 है तथा मानक विचलन 10.61 है। 358 df पर सार्थकता के लिए 't' का मानक मान 0.01 विश्वास स्तर पर 2.58 तथा 0.05 विश्वास स्तर पर 1.96 है, जबकि अध्ययन से प्राप्त 't' का मान –2.19 है, जो कि दोनो विश्वास स्तरों के मानों से कम है। अतः शोध क्षेत्र के ग्रामीण व शहरी विद्यालयों में शैक्षिक तकनीकी के उपयोग के फलस्वरूप शिक्षकों के शिक्षण कौशल पर पड़ने वाले प्रभाव में कोई सार्थक अन्तर नही है।

संदर्भ

1. शर्मा, राजकुमारी, श्रीवास्तव एस.बी.एन., दुबे, एस.के. (2007), भारतीय शिक्षा और उसकी समस्यायें। राधा प्रकाशन मंदिर, आगरा।
2. तिवारी, महेन्द्र मणि एवं डॉ. जय सिंह. "उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के कला समूह के छात्र–छात्राओं की संवेगात्मक बुद्धि व तार्किक योग्यता का अध्ययन" International Journal of Advanced Educational Research. 2017: 2(1):19-23.
3. गुप्ता, एस.पी. तथा गुप्ता, अल्का (2007), सांख्यिकीय विधियाँ, इलाहाबाद : शारदा पुस्तक भवन।
4. पाठक, पी.डी. (2007), भारतीय शिक्षा और उसकी समस्याएं इक्कीसवां संस्करण, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा.
5. सिंह, ममता (2007), प्राथमिक स्तर पर निजी विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों की प्रशिक्षण आवश्यकताओं का अध्ययन, Researches and Studies. 2007; 58:85.
6. यादव, परमानंद सिंह एवं यादव लालधारी (2006), वर्तमान शैक्षिक समस्याओं के समाधान में प्राचीन भारतीय शैक्षिक परम्पराओं की प्रासंगिकता। भारतीय आधुनिक शिक्षा, एन.सी. ई.आर.टी., वर्ष–24, अंक–3 पृष्ठ–75–84।